विचार बिन्दु

उस मनुष्य से गरीब कोई नहीं, जिसके पास केवल धन है। –कहावत

एसआईआर का अर्थ, हजारों करोड़ व्यर्थ

23 सितंबर, 2026 को इंडियन एक्सप्रेस में चुनाव आयोग के दो आयुक्तों द्वारा 10 महीने में 14 बार मुख्य चुनाव आयुक्त के निर्णय और उनकी कार्य प्रणाली पर आपत्ति किए जाने का समाचार प्रकाशित हुआ । इस रिपोर्ट में विस्तार से यह खुलासा किया गया था कि किन-किन बिंदुओं पर आयुक्तों ने आपक्तियां व्यक्त की थीं, किंतु इसके बाद भी मुख्य चुनाव आयुक्त द्वारा आदेश जारी कर दिए गए। इसके बाद लगातार विपक्षी दलों एवं सिविल सोसाइटी संगठनों द्वारा देश के विभिन्न भागों में आंदोलन प्रारंभ हुए। इसमें कई गैर राजनैतिक हस्तियां भी शामिल हुईं। कॉकरोच जनता पार्टी ने एस आई आर निरस्त करने और ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग की। यह आंदोलन शीघ्र ही इतना बढ गया कि सरकार ने बौखला कर दिल्ली में सभी प्रकार के प्रदर्शनों पर रोक लगा दी और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 लगा दी। दिल्ली में प्रदर्शन को रोकने के लिए लगभग 50000 पुलिस कर्मी और विभिन्न अर्ध सैनिक बलों को तैनात कर दिया गया।

बढते आंदोलन एवं तीव्र विरोध को देखते हुए गत 50 दिनों में चुनाव आयोग द्वारा एस आई आर संबंधी अपने कई निर्णयों को वापस ले लिया गया। एक प्रकार से चुनाव आयोग ने बैकफुट पर जा कर कई यू टर्न ले लिए। यू टर्न लेने का यह सिलसिला अभी तक जारी है।

यह उल्लेखनीय है कि एस आई आर के कारण लगभग 13 करोड मतदाताओं के वोट कट गए। इनमें 2.89 करोड तो उत्तर प्रदेश में थे।इसी बीच, पश्चिम बंगाल और बिहार सहित कई राज्यों में विधानसभा चुनाव भी हो गए। जून 2025 से, जब से एस आई आर प्रारंभ हुआ, तब से इस पर हजारों करोड रुपए खर्च हो चुके हैं। इस पर खर्चा केवल चुनाव आयोग और सरकारों द्वारा ही हुईनहीं किया गया अपितु लाखों, करोडों प्रवासी मजदूरों द्वारा भी खर्च किया गया जो अपना काम छोड कर बंगाल और बिहार गए। इसके कारण उन्हें अत्यंत परेशानी और प्रताडना का भी सामना करना पडा। इन लोगों से अपनी भारतीय नागरिकता सिद्ध करने के लिए अनेक प्रकार के दस्तावेज मांगे गए, जिन्हें बनवाने के लिए अनेक सरकारी कार्यालयों के कई बार चक्कर लगाने पडे। इस बीच, कुछ राज्यों में चुनाव भी हो गए और इन्हीं कटी हुई मतदाता सूचियों के आधार पर भाजपा और समर्थित दलों की सरकारें भी बन गईं।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी निरंतर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर वोट चोरी का आरोप, प्रमाण सहित, लगाते रहे किंतु उनके कान पर जूं तक नहीं रेंगी। वे आयोग से पूछे जा रहे अनेक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए सामने नहीं आये । वे एक प्रकार से अहंकार में ही डूबे रहे और मनमाने आदेश जारी करते रहे। यह बताना प्रासंगिक होगा कि 2023 में सरकार ने मुख्य चुनाव आयुक्त को किसी भी आपराधिक कार्यवाही से आजीवन बचाने के लिए उन्हें पूर्ण सुरक्षा दे दी। इसका अर्थ यह हुआ कि मुख्य चुनाव आयुक्त गणेश कुमार द्वारा लिए गए किसी भी निर्णय के लिए उनके विरुद्ध जीवन भर कोई भी कार्रवाई कानूनी रूप से नहीं हो सकती एवं न हीं उन्हें किसी प्रकार की कोई सजा दी जा सकती है। यह सर्वविदित है कि उन्हें सत्ताधारी दल का पूर्ण संरक्षण प्राप्त था। सत्ताधारी दल के कई नेता खुलकर चुनाव आयोग के निर्णय का समर्थन कर रहे थे।

अब जबकि, चुनाव आयोग अपने सभी निर्णय,एक एक कर, यू टर्न लेकर बदल रहा है तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ये सारे निर्णय पहले लिए ही क्यों गए थे? इससे पहले कि हम इस प्रश्न पर विचार करें, पाठकों के लिए यह जानना उपयुक्त होगा कि अब तक चुनाव आयोग कौन कौन से 'यू टर्न' ले चुका है?

सबसे बडा यू टर्न, मतदाता के माता पिता/ दादा - दादी की पुराने एस आई आर से 'मैपिंग' की अनिवार्यता को समाप्त करने का था। नाम जुडवाने के लिए एन्यूमरेशन फॉर्म के साथ में अपने परिवार के माता-पिता और दादा दादी का नाम पुरानी एस आई आर में होने की जो अनिवार्यता रखी गई थी, उसे समाप्त कर दिया गया। मतदाता सूचियों में नाम अंकित करने में यही बात सबसे बडी अडचन सिद्ध हो रही थी। इसी के कारण लाखों व्यक्ति नाम जुडवाने से वंचित रहे। इनमें से कोई तो ऐसे प्रबुद्ध व्यक्ति तक थे जो वर्षों से किसी स्थान पर अपना मत दे रहे थे, किंतु केवल इस मैपिंग के अभाव के कारण उनका नाम मतदाता सूची में नहीं जुड पाया। अब इस निर्णय को वापस ले लिया गया है ।

दूसरा बडा 'यू टर्न' मतदाता सूचियों को मशीन रीडेबल फॉरमेट में उपलब्ध कराने से संबंधित है। अब आयोग मतदाता सूचियां "मशीन रीडेबल फॉरमेट" में उपलब्ध कराएगा। इसका अर्थ यह हुआ कि कोई भी व्यक्ति, अन्य किसी भी व्यक्ति का नाम किसी बूथ की मतदाता सूची में है अथवा नहीं, यह देख सकेगा। अब तक चुनाव आयोग इस बात पर अडा हुआ था कि वह "मशीन रीडेबल फॉरमैट" में सूचियां उपलब्ध नहीं कराएगा जिसके कारण यह पता नहीं चल पाता था कि किस मतदान केंद्र पर कितने लोगों के नाम कटे या कितने लोगों के नाम जुड गए ?

इंडियन एक्सप्रेस के 23 सितंबर के खुलासे के बाद पहली प्रेस विज्ञिप्त में 28 सितंबर को चुनाव आयोग ने यह स्पष्ट कर दिया था कि जो भी व्यक्ति अपना नाम मतदाता सूची में जुडवाना चाहे वह फार्म 6 भर कर जुडवा सकता है। इस हेतु विभिन्न राज्यों में नाम जुडवाने की अंतिम तिथि को बढा दिया गया। इसके बाद कई लोगों ने नाम जुडवाने की कार्रवाई प्रारंभ की। इसमें भी एक समस्या यह आई कि फॉर्म 6 में यह घोषणा करनी होती है कि वह व्यक्ति पहली बार वोटर बन रहा है, जबकि वास्तविकता में वह व्यक्ति कई वर्षों से मतदाता सूची में था । इस प्रकार उससे मजबूरन गलत शपथ पत्र बनवाया जा रहा था और उसे दण्ड का भागी बनाया जा रहा था। चुनाव आयोग अडा हुआ था कि वह फॉर्म 6 के माध्यम से ही सूचि में नाम जोडेगा। इसका बहुत विरोध हुआ और मीडिया में इसे प्रमुखता से उठाया गया। महाराष्ट्र के सीईओ ने इस बारे में फॉर्म 6 को संशोधित करने की बात चुनाव आयोग से कही। अब, चुनाव आयोग ने पुन: नाम जुडवाने के लिए फॉर्म 6 भरने की प्रक्रिया समाप्त कर दी है। अत: अब आसानी से वे लोग नाम जुडवा पाएंगे जिनके नाम पहले मतदाता सूची में थे और काट दिए गए।

एस आई आर पर हजारों करोड रुपए का निरर्थक व्यय और लाखों, करोड़ों लोगों को हुई परेशानी की भरपाई कौन और कैसे करेगा? क्या सत्ताधारी दल के हाथों की कठपुतली बनकर काम करने के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को स्वयं इस्तीफा नहीं देना चाहिए? उन्हें अब तक कानून द्वारा दी गई सुरक्षा को भी पुनः वापस नहीं लिया जाना चाहिए? उनके कृत्य एक प्रकार से अपराध की श्रेणी में आते हैं जिसके लिए जिम्मेदार ठहरा कर सजा देनी ही होगी।

चुनाव आयोग ने 28 जुलाई , 2026 को एक आदेश जारी कर की महानिदेशक (आई टी) की रिपोर्टिंग उप चुनाव आयुक्त से हटा कर सीधे चुनाव आयोग को कर दी थी। अब इस आदेश को निरस्त करके पुन:उन्हें उपायुक्त के अधीन किया गया है।

चुनाव आयोग की ओर से भाजपा के प्रवक्ता बार-बार यह कह रहे थे कि जिन व्यक्तियों के नाम कटे हैं वे ए (अब्सेंट), एस (शिफ्टेड), डी (डेड), डी (डुप्लीकेट) श्रेणी के हैं।

अब, उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव जो मार्च में संभावित हैं, से पहले सब कटे हुए नामों को पुन: जोडने का अभियान आयोग द्वारा चलाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य नाथ योगी ने कई महीने पहले ही यह बता दिया था कि जिन लोगों के नाम काटे हैं उनमें से 1. 27 करोड हिंदू हैं। उन्होंने अपने पार्टी के कार्यकर्ताओं का आव्हान किया था कि प्रत्येक बूथ पर 200 नाम जुडवाएं । यह तो माना जा सकता है कि जिनके नाम गलत रूप से कट गए हैं उन्हें वापस जुडवाने का प्रयास करें किन्तु उसके लिए कोई लक्ष्य दिया जाय, यह अजीब लगता है ।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में यह उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के चुनाव आगामी तीन-चार महीने में होने हैं। उत्तर प्रदेश का राजनीतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। इसी राज्य के कारण भाजपा गत लोकसभा चुनाव में अपने स्तर पर पूर्ण बहुमत प्राप्त करने में असफल रही थी। उत्तर प्रदेश चुनाव से पहले एस आई आर संबंधी अधिकांश आदेश वापस लिया जाना इस बात का संकेत है कि पहले जानबूझकर लोगों के नाम काटे गए थे और अब स्वयं चुनाव आयोग अभियान चला करके लोगों के नाम जोडने के लिए शिविर लगा रहा है और हर प्रकार की शिथिलता दे रहा है। कितनी विचित्र बात है कि जो चुनाव आयोग ने पहले तो शुद्धिकरण के नाम पर मतदाता सूचियों को अशुद्ध किया और अब फिर से कटे नामों को जोडकर, अशुद्ध हो गई मतदाता सूचियां को पुन: शुद्ध करने की बात कर रहा है। पहले तो किसी मतदाता सूची को अशुद्ध करें, एवं फिर उसका शुद्धिकरण करें, यह केवल सरकारी धन का दुरुपयोग नहीं तो और क्या कहा जाएगा? अच्छा तो यह होता कि आयोग, एस आई आर को निरस्त करके जून 2025 से पूर्व की मतदाता सूचियों को बहाल कर देता। इससे एस आई आर में लाखों सरकारी कर्मचारियों को लगाने के कारण शिक्षा और स्वास्थ्य में जो काम बुरी तरह प्रभावित हुआ, वह नहीं होता। यदि सभी कटे हुए नाम को जोडना ही था तो यह सब परेशानी लोगों के लिए क्यों पैदा की गई और हजारों करोड क्यों व्यर्थ किये गये? इससे यह भी सिद्ध होता है कि सिविल सोसाइटी संगठन और विपक्ष ज्ञानेश कुमार पर जो आरोप लगा रहे थे, वे बिल्कुल सही थे।

हालांकि सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आना अभी शेष है और एस आई आर को औपचारिक रूप से निरस्त करने की घोषणा करना भी शेष है । वैसे भी, जितने नाम कटे, उन्हें जोड़ने के लिए तो स्वयं चुनाव आयोग अभियान चला रहा है। ऐसा तो हर बार चुनाव के समय पहले भी होता ही था।

एस आई आर पर हजारों करोड रुपए का निरर्थक व्यय और लाखों, करोडों लोगों को हुई परेशानी की भरपाई कौन और कैसे करेगा? क्या सत्ताधारी दल के हाथों की कठपुतली बनकर काम करने के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को स्वयं इस्तीफा नहीं देना चाहिए? उन्हें अब तक कानून द्वारा दी गई सुरक्षा को भी पुन: वापस नहीं लिया जाना चाहिए? उनके कृत्य एक प्रकार से अपराध की श्रेणी में आते हैं जिसके लिए जिम्मेदार ठहरा कर सजा देनी ही होगी । शायद इसीलिए विपक्षी दलों और "पीपुल अगेंस्ट एस आई आर" द्वारा आंदोलन जारी रखने का निर्णय किया गया है।

सरकारी अधिकारियों पर राजकोष को थोडी बहुत भी क्षित पहुंचाने के लिए उन पर अनुशासनिक कार्रवाई करके दंडित किया जाता है। क्या संवैधानिक संस्था चुनाव आयोग के मुखिया ज्ञानेश कुमार को इसी आधार पर दंडित नहीं किया जाना चाहिए? इसी आशंका के चलते, पहले ही भारत सरकार ने कानून में बदलाव करते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त को किसी भी प्रकार की कार्रवाई से बचने के लिए उन्हें आजीवन सुरक्षा कवच दे दिया गया है। अब इसे भी सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है।

उपरोक्त विवेचन से यह तो स्पष्ट ही है कि जिस एस आई आर का बहुत गुणगान किया गया, अब वह सब केवल "ढाक के तीन पात" की तरह सिद्ध हो रहा है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि चुनाव आयोग ने एस आई आर के नाम पर बहुत क्रूर मजाक देश के साथ किया। इसका खामियाजा यह देश अभी तक भुगत रहा है। एस आई आर को हजारों करोड बेकार करने वाली कवायद कहना उपयुक्त होगा जिसने करोडों भारतीय नागरिकों पर सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजना के लाभ से वंचित होने की तलवार लटका दी।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

सांगानेर की तर्ज पर बसा विश्व का पहला वास्तु आधारित शहर "जयपुर"

जयपुर स्थापना के 299 वर्ष : तीन सदियों का गुलाबी सफर



डॉ. गोरधन लाल शर्मा

राजस्थान की राजधानी जयपुर केवल एक नगर नहीं, बल्कि भारतीय स्थापत्य कला, वास्तुशास्त्र, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, दूरदर्शी नगर नियोजन और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अद्भुत उदाहरण है। अरावली की पहाड़ियों के आंचल में बसा यह गुलाबी नगर अपनी विशिष्ट पहचान के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। वर्ष 1727 में महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित जयपुर अपनी स्थापना के 299 वर्ष पूरे कर रहा है। लेकिन जयपुर के इस गौरवशाली नगरीय इतिहास की जड़ें केवल 1727 तक सीमित नहीं हैं। इसके पीछे लगभग दो शताब्दी पहले विकसित हुई सांगानेर की एक समृद्ध नगरीय परंपरा भी दिखाई देती है।

सांगानेर : जयपुर की नगरीय परिकल्पना का ऐतिहासिक आधार-जयपुर से लगभग 16 किलोमीटर दक्षिण में स्थित सांगानेर आज अपने विश्वप्रसिद्ध हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग उद्योग, जैन मंदिरों, हस्तशिल्प और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। लेकिन सांगानेर का महत्त्व केवल एक औद्योगिक अथवा धार्मिक कस्बे के रूप में नहीं है। इसका अपना एक विशिष्ट ऐतिहासिक और नगरीय विकास क्रम रहा है।

ऐतिहासिक संदर्भों के अनुसार, कछवाहा राजवंश के शासक पृथ्वीराज के पुत्र सांगा जी ने 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में सांगानेर को नए नगर के रूप में विकसित किया। प्रचलित ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार इसका नाम उनके नाम पर सांगानेर पड़ा। वर्ष 1526 का समय इस नगर के विकास के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखता है।

सांगानेर उस समय एक सुव्यवस्थित, सुरक्षित और व्यावसायिक दृष्टि से विकसित नगर था। इसकी अपनी परकोटा व्यवस्था थी। नगर में प्रवेश के लिए अलग-अलग दिशाओं में दरवाजे बनाए गए थे। नगर की सुरक्षा, आवागमन और व्यापारिक गतिविधियों को ध्यान में रखकर इसकी संरचना विकसित की गई थी। यहां दरवाजों के साथ त्रिपोलिया, चौपड़, बाजार और सार्वजनिक गतिविधियों के लिए निर्धारित स्थानों की व्यवस्था थी।

सांगानेर के पुराने स्वरूप के अवशेष आज भी उसके गौरवशाली अतीत की कहानी कहते हैं। मालपुरा गेट, आमेर गेट, चाकसू गेट और अन्य पुराने प्रवेश मार्गों के अवशेष इस ऐतिहासिक विरासत की याद दिलाते हैं। दौसा गेट और सांभर गेट जैसे पुराने द्वारों के अवशेष अथवा उनके लुप्त होते स्वरूप के साथ स्थानीय इतिहास की अनेक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। ये केवल आवागमन के रास्ते नहीं थे, बल्कि नगर की पहचान, सुरक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था के प्रतीक थे। इस प्रकार सांगानेर में परकोटे, दरवाजों, चौपड़, बाजारों और त्रिपोलिया के माध्यम से एक ऐसी नगरीय व्यवस्था विकसित हो चुकी थी, जिसमें सुरक्षा, व्यापार, सामाजिक जीवन और सार्वजनिक स्थानों का समन्वय दिखाई देता था।

सांगानेर से जयपुर तक : दो शताब्दियों की नगरीय यात्रा- सांगानेर की इस ऐतिहासिक नगरीय परंपरा के लगभग दो सौ वर्ष बाद कछवाहा शासक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1727 में एक नए और भव्य नगर की परिकल्पना की। आमेर की पहाड़ियों में स्थित तत्कालीन राजधानी को बढ़ती जनसंख्या, जल की उपलब्धता और प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण एक नए स्थान पर विकसित करने की आवश्यकता महसूस हुई। सवाई जयसिंह केवल एक शासक नहीं, बल्कि गणित, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, स्थापत्य और विज्ञान में गहरी रुचि रखने वाले दूरदर्शी व्यक्तित्व थे। उन्होंने एक ऐसे नगर की कल्पना की, जो आने वाली कई शताब्दियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इस महान परिकल्पना को साकार करने में वास्तुकार एवं नगर नियोजक विद्याधर भट्टाचार्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

यहां सांगानेर और जयपुर की नगरीय संरचना के बीच एक रोचक ऐतिहासिक साम्य दिखाई देता है। सांगानेर में पहले से विकसित परकोटा, प्रवेश द्वार, चौपड़, बाजार और त्रिपोलिया जैसी व्यवस्थाएं जयपुर की नगरीय परिकल्पना के साथ तुलना का आधार प्रस्तुत करती हैं। यह कहना अधिक उचित होगा कि सांगानेर की पुरानी नगरीय परंपरा और जयपुर की व्यापक नगर योजना राजस्थान में विकसित शहरी स्थापत्य की एक महत्त्वपूर्ण निरंतरता को दर्शाती हैं।

वास्तुशास्त्र और वैज्ञानिक नगर नियोजन का अद्भुत उदाहरण

जयपुर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका निर्माण किसी प्राकृतिक रूप से विकसित बस्ती की तरह अनियोजित ढंग से नहीं हुआ, बल्कि एक सुविचारित योजना के अंतर्गत किया गया। वास्तुशास्त्र और शिल्पशास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर नगर को चौकड़ियों में विभाजित किया गया। मुख्य सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। बाजारों, आवासीय क्षेत्रों, मंदिरों, राजमहल और सार्वजनिक स्थलों के लिए अलग-अलग स्थान निर्धारित किए गए।

नगर के प्रमुख मार्गों को चौड़ा रखा गया तथा बाजारों में दुकानों और भवनों के अग्रभागों में एकरूपता का विशेष ध्यान रखा गया। चौपड़ की व्यवस्था ने सार्वजनिक जीवन को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया। बड़ी चौपड़ और छोटी चौपड़ केवल यातायात के केंद्र नहीं थीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक गतिविधियों के प्रमुख स्थल भी थीं। जयपुर का परकोटा और उसके विशाल प्रवेश द्वार नगर की सुरक्षा के साथ-साथ स्थापत्य सौंदर्य के भी प्रतीक बने। नगर की योजना में नौ चौकड़ियों की अवधारणा, दिशाओं का संतुलन, व्यापारिक मार्गों का निर्धारण और सार्वजनिक स्थानों की व्यवस्था उस समय के भारतीय नगर नियोजन की उच्च परिपक्वता को प्रदर्शित करती है।

गुलाबी रंग ने दी विश्वव्यापी पहचान-जयपुर की पहचान गुलाबी नगर के रूप में 1876 में और अधिक स्थापित हुई, जब महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय ने प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत में नगर के भवनों को गुलाबी रंग से रंगवाया। भारतीय परंपरा में गुलाबी रंग आतिथ्य, सौहार्द और स्वागत का प्रतीक माना जाता है। इसके बाद गुलाबी रंग जयपुर की स्थापत्य पहचान का अभिन्न हिस्सा बन गया।

आज हवा महल, सिटी पैलेस, जंतर-मंतर, त्रिपोलिया गेट, बड़ी चौपड़, छोटी चौपड़ और ऐतिहासिक बाजारों की इमारतें इस विरासत को जीवंत बनाए हुए हैं। जयपुर की इसी विशिष्ट नगर योजना और स्थापत्य महत्त्व को वैश्विक मान्यता तब मिली, जब वर्ष 2019 में यूनेस्को ने जयपुर के परकोटा क्षेत्र को विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया। यूनेस्को ने इसे दक्षिण एशिया में स्वदेशी नगर नियोजन और निर्माण कला का असाधारण उदाहरण माना। यह सम्मान केवल जयपुर के भवनों अथवा स्मारकों का नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, वास्तुशास्त्र और वैज्ञानिक नगर नियोजन की वैश्विक स्वीकृति है।

विरासत का सम्मान, भविष्य का संकल्प -जयपुर के 299 वर्षों का यह सफर हमें केवल अतीत की गौरवगाथा नहीं सुनाता, बल्कि भविष्य के लिए भी अनेक संदेश देता है। सांगानेर की ऐतिहासिक नगरीय व्यवस्था से लेकर सवाई जयसिंह की दूरदर्शी नगर योजना और आज के आधुनिक महानगर तक जयपुर ने विकास के अनेक चरण देखे हैं।

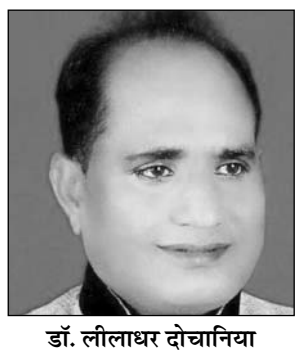
आज आवश्यकता है कि जयपुर के साथ-साथ सांगानेर की ऐतिहासिक विरासत का भी संरक्षण किया जाए। उसके पुराने दरवाजों, परकोटे, चौपड़, बाजारों और पारंपरिक स्थापत्य का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण हो। सांगानेर को केवल औद्योगिक क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि जयपुर की ऐतिहासिक नगरीय परंपरा के एक महत्त्वपूर्ण अध्याय के रूप में भी स्थापित किया जाए। तीन सदियों का यह गुलाबी सफर वास्तव में भारतीय प्रतिभा, परंपरा और दूरदर्शिता की कहानी है। सांगानेर की ऐतिहासिक विरासत और जयपुर की विश्वविख्यात नगर योजना को एक साथ देखने पर राजस्थान की नगरीय सभ्यता की एक विशिष्ट तस्वीर उभरती है।

जयपुर की पहचान केवल उसकी गुलाबी इमारतों में नहीं, बल्कि उस विचार में है जिसने लगभग तीन शताब्दियों पहले एक आदर्श नगर का सपना देखा और उसे धरातल पर साकार किया। सांगानेर उस ऐतिहासिक यात्रा की पुरानी कड़ी है और जयपुर उसका विश्वविख्यात विस्तार। यही है जयपुर का गौरव, यही उसकी विरासत और यही उसके भविष्य की प्रेरणा। (...शेष)

–डॉ. गोरधन लाल शर्मा,
लेखक, समाजशास्त्री एवं
वरिष्ठ अधिकारी।

डिग्री नहीं, दृष्टि भी जरूरी: आज के विद्यार्थी कल के समाज का निर्माण करेंगे

विशेष आलेख – 17 नवंबर - अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस



डॉ. लीलाधर दोचानिया

शिक्षा मनुष्य के जीवन का वह प्रकाश है, जो उसे अज्ञानता के अंधकार से निकालकर ज्ञान, विवेक और समझ की ओर ले जाता है। लेकिन क्या शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छी डिग्री प्राप्त करना, बड़ी नौकरी हासिल करना और अधिक धन कमाना है? निश्चित रूप से नहीं। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य एक ऐसे मनुष्य का निर्माण करना है, जो स्वयं के जीवन को बेहतर बनाने के साथ-साथ परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो।

आज का विद्यार्थी केवल अपने परिवार की आशाओं का केंद्र नहीं है, बल्कि वह आने वाले कल की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था का निर्माता भी है। उसके विचार, व्यवहार, संस्कार और निर्णय ही भविष्य के समाज की दिशा तय करेंगे। इसलिए विद्यार्थी जीवन को केवल परीक्षा और परिणाम तक सीमित करके नहीं देखा जाना चाहिए।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। आज विद्यार्थी घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह निश्चित रूप से एक बड़ी उपलब्धि है। लेकिन तकनीकी ज्ञान के साथ विवेक का होना भी उतना ही आवश्यक है। जानकारी प्राप्त करना आसान हो गया है, मगर सही और गलत जानकारी में अंतर करना एक बड़ी चुनौती बन गया है। ऐसे में विद्यार्थी को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि तार्किक सोच, निर्णय लेने की क्षमता और मानवीय संवेदनाओं का भी विकास करना होगा। याद रखना चाहिए कि बड़ी डिग्री किसी व्यक्ति को योग्य बना सकती है, लेकिन उसका व्यवहार ही उसे सम्मान दिलाता है। ज्ञान का वास्तविक मूल्य तभी है, जब उसका उपयोग मानवता के हित में किया जाए। आज का विद्यार्थी अनेक प्रकार की प्रतिस्पर्धाओं से गुजर रहा है। अच्छे अंक, प्रतिष्ठित संस्थान, रोजगार और सफल करियर की दौड़ में कई बार मानसिक दबाव भी बढ़ जाता है। अभिभावकों की अपेक्षाएँ और सामाजिक तुलना विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकती हैं। विद्यार्थियों की तुलना करने के बजाय उनकी प्रतिभा को पहचानने और उसे निखारने का प्रयास होना चाहिए। असफलता को जीवन का अंत नहीं, बल्कि अनुभव और सुधार का अवसर समझना चाहिए। सफलता केवल मंजिल तक पहुँचने में नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने में भी छिपी होती है।

आज मोबाइल फोन विद्यार्थियों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। इसके माध्यम से शिक्षा, ज्ञान, समाचार और रचनात्मक गतिविधियों तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। लेकिन इसका अनियंत्रित उपयोग समय, एकाग्रता और अध्ययन की आदत को प्रभावित कर सकता है। पुस्तकों से मित्रता जीवन की सबसे मूल्यवान आदतों में से एक है। शिक्षा के साथ संस्कारों का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। माता-पिता, शिक्षक और समाज मिलकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। विद्यार्थी को बड़ों का सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, महिलाओं के प्रति आदर, जरूरतमंदों की सहायता और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा जैसे मूल्यों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। अच्छा नागरिक वही है, जो अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझे। जो समाज में सद्भाव बनाए रखे, पर्यावरण की रक्षा करे और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करे।

विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन की दिशा दिखाने वाले मार्गदर्शक होते हैं। इसी प्रकार अभिभावकों को बच्चों पर अपनी अपेक्षाएँ थोपने के बजाय उनकी रुचियों और क्षमताओं को समझना चाहिए। बच्चों की बात सुनना, उनकी समस्याओं को समझना और कठिन समय में उनका आत्मविश्वास बढ़ाना परिवार की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

बच्चों को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि उन्हें जीवन में क्या बनना है, बल्कि यह भी समझाना जरूरी है कि उन्हें कैसा इंसान बनना है। आज आवश्यकता है कि युवा आधुनिक शिक्षा और तकनीकी कौशल के साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझें। अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस हमें यह विचार करने का अवसर देता है कि विद्यार्थी केवल कल के नागरिक नहीं, बल्कि आज भी समाज के सक्रिय और महत्वपूर्ण हिस्से हैं। उनकी जिज्ञासा, ऊर्जा, रचनात्मकता और नए विचार समाज को आगे बढ़ाने की शक्ति रखते हैं।

आज प्रत्येक विद्यार्थी को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह अपने ज्ञान को अहंकार नहीं, विनम्रता का आधार बनाएगा। अपनी सफलता को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं समझेगा, बल्कि समाज के प्रति अपने दायित्वों को भी याद रखेगा। वह मेहनत करेगा, असफलताओं से सीखेगा, अपने माता-पिता और शिक्षकों का सम्मान करेगा तथा जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

अंतत: हमें यह समझना होगा कि किसी राष्ट्र की वास्तविक समृद्धि केवल ऊँची इमारतों, बड़ी अर्थव्यवस्था और आधुनिक तकनीक से नहीं मापी जाती, बल्कि वहाँ के नागरिकों के चरित्र, विचारों और मानवीय मूल्यों से भी तय होती है।

डिग्री हमें रोजगार दिला सकती है, ज्ञान हमें योग्य बना सकता है, लेकिन हमारी दृष्टि, संस्कार और चरित्र ही हमें एक बेहतर इंसान बनाते हैं। इसलिए आज के विद्यार्थी को केवल सफल होने का सपना नहीं देखना चाहिए, बल्कि ऐसा सफल व्यक्ति बनने का संकल्प लेना चाहिए, जिसकी सफलता से परिवार को गर्व, समाज को प्रेरणा और राष्ट्र को नई दिशा मिले।

क्योंकि आज की कक्षा में बैठा विद्यार्थी ही कल के भारत का नेतृत्व करेगा। हमें ऐसे युवा चाहिए, जिनके हाथों में आधुनिक तकनीक हो, मस्तिष्क में ज्ञान हो, हृदय में संवेदना हो और जीवन में राष्ट्रहित का संकल्प हो। यही शिक्षा की सार्थकता है और यही एक सशक्त, समृद्ध एवं संवेदनशील भारत की सच्ची नींव है।

डॉ. लीलाधर दोचानिया
डिप्टी डायरेक्टर
(सेवानिवृत्त), राजस्थान सरकार

राशिफल मंगलवार 17 नवम्बर, 2026



पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत-2083, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 4:35 तक, वृद्धि योग प्रात: 7:54 तक, विष्टि करण सायं 5:13 तक, चन्द्रमा दिन 3:30 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति- सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मकर, मंगल-सिंह, बुध-तुला, गुरू-सिंह, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

रवियोग रात्रि 4:45 से आरम्भ होगा। भद्रा सायं 5:13 तक रहेगी। आज दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, भौमाष्टमी है। पंचक दिन 3:30 से आरम्भ होंगे। आज से अष्टानिका महापर्व आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया- चर 9:12 से 10:52 तक, लाभ-अमृत 10:52 से 1:32 तक, शुभ 2:52 से 4:11 तक।

राहुकाल- 3:00 से 4:30 तक, सूर्योदय 6:52, सूर्यास्त 5:31



मेष
अपने व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



सिंह
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।



वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



कन्या
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आज च